पहाड़ी कोरवा जनजाति में शिक्षा एवं शिक्षण की समस्याएँ (छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले के संदर्भ में)

बीज शब्द : *पहाड़ी कोरवा जनजाति, साक्षारता दर, अज्ञानता, शैक्षणिक परिवेश।*

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

किसी भी समाज के विकास के लिए शिक्षा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक है। शिक्षा के विकास के साथ समाज के सर्वांगीण विकास की संभावनाएं परिलक्षित होता है। प्रत्येक समाज में औपचारिक शिक्षा विकास की गति का निर्धारण करती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति परम्पराओं से हटकर व्यवसाय चयन की कुशलता प्राप्त करता है। प्रस्तुत शोध पत्र की प्रविधि गुणात्मक एवं गणनात्मक तथ्यों पर आधारित है इसके साथ ही द्वितीय श्रोतों से भी तथ्यों का संकलन एवं सत्यापन किया गया है।

इरशाद खान
पी.एच.डी. -शोधार्थी (मानवविज्ञान),
मानवशास्त्रीय अध्ययन केन्द्र, उड़ीसा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट

वर्तमान युग वैज्ञानिक प्रगति और प्रोद्यौगिकीय विकास के चरम उत्कर्ष के रूप में प्रसिद्ध है, इस प्रकार की प्रगति और परिवर्तन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दर्शनीय है। मानवीय विचारों में, मानवीय चेतना, मानवीय प्रयत्नों और कार्यों में न्यूनता को साक्षात देखा जा सकता है। आज प्रत्येक मानव आधुनिक दृष्टिकोणों का पोषक तथा आधुनिक विचारधारा का समर्थक है। आधुनिक युग आधौगिक क्षेत्र में मशीनीकरण के युग के रूप में जाना जाता है। परंतु जनजातीय समाज में अन्य सामाजिक व आर्थिक पक्षों की भांति शिक्षा के क्षेत्र में भी जनजातीय समाज विभिन्न स्तरों पर है (हसनैन, 2010)। प्रत्येक समाज में औपचारिक शिक्षा विकास की गति का निर्धारण करती है। यह वैयक्तिक जीवन की अमूल्य निधि है जो उसके व्यावसायिक जीवन के चयन में सहयोग प्रदान करती है। विकासशील समाजों में शिक्षा व्यक्ति में सामजोपयोगी गुण एवं तकनीक का समावेश करती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति परम्पराओं से हट कर व्यवसाय चयन की कुशलता प्राप्त करता है (यादव, 1994)। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि अविकसित अर्थव्यवस्था में शिक्षा व्यक्ति की सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति के सुधार के साधन के रूप में कार्य करती है (देशपाण्डये, 1982)।

आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में शिक्षा और व्यवस्था एक दूसरे से इस तरह अंतरसंबंधित हो गए है कि शिक्षा को समाज के आर्थिक आधार के एक अंग के रूप में देखा जाने लगा। मुटाटकर (1973) ने जनजातीय समाज में शिक्षा की प्रकार्यवादी उपयोगिता का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि सामुदायिक कार्यों की निहित दशाओं के अनुरूप ही जनजातीय शिक्षा ग्रहण करने की ओर उन्मुख होता है। वस्तुत: शिक्षा की उपयोगिता नगरीय क्षेत्रों में अधिक है और जनजातीय क्षेत्रों में भविष्य की शैक्षणिक उपलब्धियों पर निर्भरता बहुत कम है। सच्चिदानन्द (1966) ने जनजातीय शिक्षा के सामाजिक आर्थिक पक्ष का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि शिक्षा की समस्या को जनजातीय समाज और उसकी अर्थव्यवस्था के संबंध में विश्लेषित करना चाहिए।

1950 से पहले जनजातीय लोगों को शिक्षित करने के लिए भारत सरकार की कोई भी प्रत्यक्ष योजना नहीं थी। संविधान के प्रभावी होने के पश्चात अनुसूचित जनजाति के लोगों के शिक्षा स्तर में वृद्धि करना केंद्र तथा राज्य सरकार के लिए उत्तरदायित्व हो गया। जनजातीय जनसंख्या में औपचारिक शिक्षा के विस्तार का

अनुमान जनगणना के आंकड़ों से लगाया जा सकता है। छत्तीसगढ़ के संदर्भ में देखा जाए तो 1991 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजातियों की साक्षरता 31.4 प्रतिशत है। जिसमें पुरुष साक्षरता 45.49 प्रतिशत तथा 17 प्रतिशत महिलाएं साक्षर थी। केवल 0.7 प्रतिशत जनजातीय लोग ही शिक्षित थे। 2001 की जनगणना के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य की कुल जनजातीय जनसंख्या में साक्षरता 52.02 प्रतिशत थी। जो छत्तीसगढ़ की कुल साक्षरता 64.72 से कम थी। 2011 के जनगणना के अनुसार छत्तीसगढ़ की कुल अनुसूचित जनजाति की साक्षरता 59.01 प्रतिशत, जिसमें पुरुष साक्षरता 69.7 प्रतिशत तथा 48.8 प्रतिशत महिलायें साक्षर हैं।

देश के कुल अनुसूचित जनजातियों का 8.44 प्रतिशत जनसंख्या छत्तीसगढ़ राज्य में निवासित है। जनजातियों की कुल जनसंख्या की दृष्टि से छत्तीसगढ़ सातवें स्थान पर है। भारत सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत पाँच जनजातियाँ क्रमशः कमार, अबूझमाड़ीया, बिरहोर, बैगा और पहाड़ी कोरवा को आदिम जनजाति (विशेष पिछड़ी जनजाति) के रूप में भारत सरकार द्वारा 5वी योजना प्रविधि के अंतर्गत जनजातियों की कृषि पूर्व अर्थव्यवस्था, स्थिर एवं घटती हुई अर्थव्यवस्था न्यून साक्षरता दर, पृथक्कीकरण, आदिम कृषि पर निर्भरता एवं परम्परा के शिकार के आधार पर 75 जनजातीयों को प्रिमिटिव ट्रायबल ग्रुप्स (पी.टी.जी.) का दर्जा दिया गया (छत्तीसगढ़ की आदिम जनजाति, भाग-4, 2008) जिसे 2006 में पी.टी.जी. नाम हटा कर उसे पी.वी.टी.जी.एस. (पर्टीकूलर वेनएरेबल ट्रायबल ग्रुप्स) नाम दिया गया और इनके सर्वागीण विकास के लिए केन्द्रीय अनुदान से अनेक योजनायें तैयार की गई है (ट्रायबल हेल्थ बुलेटिन, 2014। वर्तमान में पहाड़ी कोरवाओं की जनसंख्या 2001 के अनुसार कुल 33,379 आंकी गई हैं। जिसमें से सरगुजा जिले में कुल पहाड़ी कोरवा जनजाति की जनसंख्या 20,630 हैं। और इसमें से लखनपुर, उदयपुर विकासखंड के अंतर्गत कुल 1371 आंकी गई थी।

आदिम जाति अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान रायपुर छत्तीसगढ़ द्वारा 2006 के सर्वेक्षण के आधार पर राज्य में पहाड़ी कोरवा जनजाति की जनसंख्या बढ़कर 34,122 हो गई हैं। जिसमें पुरुषों व स्त्रियों की संख्या क्रमशः 17,394 व 16,728 आंकी गई हैं। साक्षरता की दृष्टि से पहाड़ी कोरवा जनजाति अन्य विशेष पिछड़ी जनजातियों की तरह अत्यंत पिछड़ी हुई हैं। आदिम जाति अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान रायपुर छत्तीसगढ़ द्वारा 2006 के सर्वेक्षण के अनुसार पहाड़ी कोरवा जनजाति की कुल साक्षरता दर 24.37 प्रतिशत हैं। जिसमे पुरुषों की साक्षरता दर 28.10 प्रतिशत एवं महिला की 21.17 प्रतिशत आंकी गई हैं। जो छत्तीसगढ़ राज्य की कुल अनुसूचित जनजातीयों की साक्षरता से कम है। प्रस्तुत शोध छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले के लखनपुर विकासखंड में निवासरत पहाड़ी कोरवा जनजातियों की शिक्षा एवं शिक्षण संबंधी समस्याओं पर आधारित है। लखनपुर विकासखण्ड छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिले के अंतर्गत स्थित हैं। जो बिलासपुर मार्ग से होते हुए अम्बिकापुर शहर से लगभग 28 की.मी. की दूरी पर स्थित हैं। लखनपुर विकासखण्ड के अंतर्गत ग्रामों में निवासरत पहाड़ी कोरवा जनजाति शहर से काफी दूर में निवासरत हैं। और इनके ग्राम अत्यधिक घने जंगलों तथा ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों के बीच स्थित हैं। इन पहाड़ों पर ही ये जनजाति अपना जीवन संघर्ष कर रहे हैं। जिसके फलस्वरूप इस जनजाति को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जिसमें से शिक्षा एवं शिक्षण की समस्या भी प्रमुख है। इसलिए शिक्षा को दृष्टि में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सम्पन्न किया गया हैं।

शोध के उद्देश्यः-

1. पहाड़ी कोरवा जनजाति में साक्षरता दर ज्ञात करना।
2. पहाड़ी कोरवा जनजाति में शिक्षण की समस्याओं का मूल्यांकन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र की प्रविधि गुणात्मक एवं गणनात्मक तथ्यों पर आधारित है, जिसके संकलन हेतु अनुसंधान तकनीकों जैसे- अवलोकन, साक्षात्कार आदि प्रविधि का समावेश किया गया है। द्वितीय समंकों के संकलन हेतु आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रायपुर, 2008 के प्रमुख आकड़ों एवं शोधपत्रों व पुस्तकों का उद्देश्यबद्ध अध्ययन किया गया।

प्रतिदर्शो का चयन

वर्तमान शोध की सीमा व समय को दृष्टिगत रखते हुए, छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले के लखनपुर विकासखंड में निवासरत पहाड़ी कोरवा जनजाति से दैव निदर्शन के आधार पर 110 प्रतिदर्शों का चयन किया गया तथा शालागामी उम्र के बच्चों में कुल 185 बालक- बालिकाओं को शामिल किया गया जिसमें 117 बालक 68 बालिकाएँ हैं। इसके साथ ही वहाँ स्थित स्कूलों में शिक्षण संबंधी समस्याओं का मूल्यांकन भी किया गया। यह चयन अध्ययन की समस्या एवं उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए इस प्रकार किया गया। कि निकाला गया निदर्श अपने समग्र का

अध्ययन कर सके।

परिणाम एवं विवेचना:-

सारणी 1 से प्रस्तुत समंकों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ की कुल जनजातीय जनसंख्या में साक्षरता 59.10 प्रतिशत है, जो छत्तीसगढ़ राज्य की कुल साक्षरता 70.78 प्रतिशत से कम है। पहाड़ी कोरवा जनजाति में साक्षरता (आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रायपुर) 2006 के सर्वेक्षण के अनुसार छत्तीसगढ़ के कुल पहाड़ी कोरवा जनजाति में साक्षरता 24.71 प्रतिशत था। वर्तमान अध्ययन में सरगुजा जिले के लखनपुर विकासखण्ड में निवासरत पहाड़ी कोरवा जनजाति में साक्षरता दर (110 प्रतिदर्शों में) ज्ञात करने में पाया गया की 39.09 प्रतिशत सदस्य साक्षर है। इस प्रकार प्राप्त आकड़ों से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पहाड़ी कोरवा जनजाति में राज्य की कुल आदिम जनजाति के साक्षरता दर से बहुत निम्न है। इस जनजाति में साक्षरता बढ़ाने के लिए विशेष शैक्षणिक विकास कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

सारणी 2:- पहाड़ी कोरवा जनजाति में पुरुष एवं महिला की शैक्षणिक स्थिति

सारणी 2 में दिये गए समंकों से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश (60.90 प्रतिशत) पहाड़ी कोरवा जनजाति के पुरुष एवं महिलाएं अशिक्षित पाये गए। इसके फलस्वरूप अधिकांश उत्तरदाता प्राथमिक स्तर (14.54 प्रतिशत) तथा 15.45 प्रतिशत बालवाड़ी तक शिक्षा प्राप्त किए हैं। माध्य.ध उ.मा.शाला से ऊपर शिक्षित व्यक्तियों में मात्र 2.72 प्रतिशत है। इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पहाड़ी कोरवा जनजाति में अशिक्षा के कारणों में पारिवारिक, आर्थिक परिस्थिति, आजीविका की समस्या एवं शिक्षा के लाभों से अज्ञानता को प्रमुख कारक मान सकते है।

सारणी ३:- के अनुसार पहाड़ी कोरवा जनजाति में 6 - 15 वर्ष के शालागामी उम्र के बच्चों में निरक्षरों की संख्या 32.97 प्रतिशत है। बालिकाओं की तुलना में बालकों में यह संख्या अधिक (33. 33 प्रतिशत) पाई गई। इस प्रकार उपर्युक्त समंकों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पहाड़ी कोरवा बालिकाओं को लगभग 32.35 प्रतिशत माता-पिता स्कूल नहीं भेजते हैं। पहाड़ी कोरवा बच्चों तथा इनके माता-पिता को शिक्षा के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता हैं।

सारणी ४ में उत्तरदाताओं के परिवार में बालक और बालिकाओं की अशिक्षा कारणों के संदर्भ में जो समंक प्रस्तुत किए गए हैं, उनसे स्पष्ट होता है कि 35.60 प्रतिशत उत्तरदाता बालकों की अशिक्षा का प्रमुख कारण निर्धनता तथा 26.66 प्रतिशत जीविकोपार्जन में सहभागिता को मानते थे। अन्य कारण जैसे अशिक्षा के प्रतिफलों अथवा उसकी उपयोगिता के प्रति अज्ञानता को 23.33 प्रतिशत

सारणी 1:- छत्तीसगढ़ के पहाड़ी कोरवा जनजातियों में साक्षारता की स्थिति

क्र.	साक्षरता की स्थिति						
		साक्षर		निरक्षर		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	छत्तीसगढ़ में साक्षरता दर (2011)	18082670	70.78	7462528	29.21	25545198	100.00
2	छत्तीसगढ़ की कुल अनुसूचित जनजातियों में साक्षरता दर (2011)	4630000	59.10	3192902	40.90	7822902	100.00
3	सरगुजा जिले में कुल अनुसूचित जनजातियों में साक्षरता दर (2011)	699851	53.80	600777	46.19	1300628	100.00
4	छत्तीसगढ़ के कुल पहाड़ी कोरवा जनजाति में साक्षरता दर (2006)	7512	24.71	22892	75.29	30404	100.00
5	सरगुजा जिले के लखनपुर विकासखंड के कुल पहाड़ी कोरवा जनजाति में साक्षरता दर (वर्तमान अध्ययन 2013	43	39.09	67	60.90	110	100.00

उत्तरदाताओं द्वारा बालकों की अशिक्षा का प्रमुख कारक बतलाया गया। बालकों की अपेक्षा बालिकाएं जीवोकोपार्जन में अधिक सहयोगी थी। कुल 30.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कथन था कि बालिकाएँ जीविकोपार्जन हेतु वर्तमान श्रम संरचना में अधिक सहयोग करती है। और उनकी शिक्षा कोई आवश्यक नहीं है। 23. 33 प्रतिशत परिवारों के कुछ बालक तथा 18.00 प्रतिशत परिवारों की कुछ बालिकाएँ शिक्षा प्राप्त करने नजदीकी स्कूलों में जाती थी, जबकि उनमें से अधिकांश को शिक्षा की अवधारणा के संदर्भ में कोई ज्ञान नहीं था।

उपरोक्त समंकों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पहाड़ी कोरवा जनजाति में शिक्षण संबंधी समस्याओं में 29.09 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि आवागमन के साधन में कमी का होना ही शिक्षा के धीमे विकास का महत्त्वपूर्ण कारण है। 23.63 प्रतिशत यहाँ शिक्षकों के रहने के लिए उपर्युक्त सुविधा उपलब्ध न होना है, 20.90 प्रतिशत यहाँ चलाये जा रहे शिक्षा योजना का सुचारु रूप से पालन न होना। 15.45 प्रतिशत अन्य कारण देखने को मिले जैसे- शिक्षा देने वाले शिक्षकों को वहाँ की जीवन तथा संस्कृति के बारे में विस्तृत जानकारी का न होना तथा वहाँ की भाषा का ज्ञान न होना उचित शिक्षण देने में बाधक बन रहे है। मात्र 10.90 प्रतिशत सदस्य शिक्षण के संदर्भ में कोई

सारणी 2:- पहाड़ी कोरव ा जनजाति में पुरुष एवं महिला की शैक्षणिक स्थिति

क्र.	शिक्षा का स्तर	कुल साक्षर व्यक्ति					
		पुरुष		स्त्री		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	35	58.33	32	64.00	67	60.90
2	बालवाड़ी	9	15.00	08	16.00	17	15.45
3	प्राथमिक शाला	10	16.66	06	12.00	16	14.54
4	पूर्व प्राथमिक शाला	04	6.66	03	6.00	07	6.36
5	माधय.ध उ.मा.शाला से ऊपर	02	3.33	01	2.00	03	2.72
	योग	60	100.00	50	100.00	110	100.00

सारणी ३:- पहाड़ी कोरवा जनजाति में शालागामी उम्र के बच्चों में साक्षरता स्थिति (६-१५ वर्ष)

क्र.	शिक्षा का स्तर	कुल साक्षर व्यक्ति					
		बालक		बालिका		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	साक्षर जनसंख्या	78	66.66	46	67.64	124	67.02
2	निरक्षर जनसंख्या	39	33.33	22	32.35	61	32.97
	कुल योग	117	100.00	68	100.00	185	100.00

सारणी ४:- पहाड़ी कोरवा जनजाति के शालागामी उम्र के बच्चों में अशिक्षा के कारण

क्र.	अशिक्षा का कारक	कुल साक्षर व्यक्ति					
		बालक		बालिका		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	गरीबी या निर्धनता	21	35.60	19	38.00	40	36.36
2	जीवोकोपार्जन में सहभागिता	16	26ण्66	15	30.00	31	28.18
3	अन्य कारण	14	23.33	09	18.00	23	20.90
4	कोई प्रत्युत्तर नहीं	09	15.00	07	14.00	16	14.54
	कुल योग	60	100.00	50	100.00	110	100.00

प्रत्युत्तर नहीं दिये।

निष्कर्ष एवं सुझाव

शिक्षा के विकास के साथ समाज के सर्वांगीण विकास की संभावनाएं परिलक्षित होती है। शिक्षा के स्तर के अनुरूप व्यक्ति उत्तरदायित्वपूर्ण स्थानों को प्राप्त करने में सफल होते हैं तथा परिस्थिति के सूचक होने के परिणामस्वरूप विकासशील समाजों में परिवार का प्रत्येक सदस्य शिक्षा के प्रति एक दूसरे को प्रेरित करता रहता है। विश्लेषित उपरोक्त सारणी को आधार मानते हुए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिले के लाखनपुर विकासखंड में निवासरत पहाड़ी कोरवा जनजाति में 39.09 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित पाये गये। इसके फलस्वरूप अधिकांश व्यक्ति प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त किए हैं। पहाड़ी कोरवा जनजाति में 6-18 वर्ष के शालागामी उम्र के बच्चों में निरक्षरों की संख्या 32.97 प्रतिशत है। बालिकाओं की तुलना में बालकों में यह संख्या अधिक (33.33 प्रतिशत) पाई गई। शिक्षणों की समस्याओं पर अध्ययन कर पाया गया, कि पहाड़ी कोरवा जनजाति में शिक्षा के धीमे विकास का महत्त्वपूर्ण कारण है शिक्षकों की कमी एवं आवागमन के साधन में कमी जैसी समस्या व्याप्त है। जनजातीय क्षेत्रों के अधिकतर प्रारम्भिक स्कूलों में एक ही शिक्षक है। प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी इसका कारण हो सकता है। पहाड़ी कोरवा जनजातियों में शिक्षण की समस्या में यह देखा गया की निवास स्थान एवं भौगोलिक परिवेश के कारण भी इस क्षेत्र में शिक्षा का स्तर निम्न पाया गया। क्योंकि अधिकतर जनजातीय ग्राम दूर-दूर हैं तथा स्कूलों तक पहुँचने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। इसके साथ ही शिक्षकों को शिक्षण देने के लिए स्कूलों तक आने में भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि अशिक्षा के कारणों में पारिवारिक, आर्थिक परिस्थिति, आजीविका की समस्या एवं शिक्षा के लाभों से अज्ञानता को प्रमुख निर्धारक माना जा सकता है। यथास्थिति विश्लेषण के आधार पर यह सुझाव प्रस्तावित किया जा सकता है कि पहाड़ी कोरवा जनजाति में भारत सरकार तथा शैक्षणिक विकास हेतु ऐसी योजनाएँ बनानी चाहिए जिनकी सहायता से माता-पिता तथा स्कूल व शिक्षकों के बीच संबंध स्थापित हो सके। पढ़ने लिखने की शिक्षा के साथ-साथ स्कूलों में प्रारम्भिक तकनीकी ज्ञान भी दिया जाना चाहिए तथा छात्रों, शिक्षकों तथा माता-पिताओं के परस्पर सम्बन्धों से एक मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाना चाहिए जिससे पहाड़ी कोरवा जनजाति के बच्चों तथा इनके माता-पिता को शिक्षा के प्रति जागरूक किया जा सके। इसके साथ ही भारत सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा जो शैक्षणिक विकास हेतु अनेक योजनाएँ चलाएं जा रहें है उसे शिक्षा विभाग द्वारा समय-समय मूल्यांकन किया जाये की वह सुचारु रूप से चल रहा है कि नहीं और इससे वहाँ की जनजातीय समाज कितना लाभान्वित हो रही है।

सारणी ५:- पहाड़ी कोरवा जनजाति में शिक्षण संबंधी समस्या के कारण

क्र.	शिक्षण संबंधी कारक	संख्या	प्रतिशत
1	आवागमन के साधन में कमी	32	29.09
2.	शिक्षकों के रहने के लिए उपर्युक्त सुविधा उपलब्ध ना होना।	26	23.63
3.	शिक्षा योजना का सुचारु रूप से पालन न होना।	23	20.90
4.	अन्य कारण	17	15.45
5.	कोई प्रत्युतर नहीं	12	10.90
	कुल योग	110	100.00

संदर्भः-

1. Deshpandey, M.V., 1982. Entrepreneurship of small scale in dustiest, New Delhi: Deep &deep Publication.
2. Hasnain, N., 2004. Tribal India, New Delhi, Jawahar Publishers and Distributer.
3. Mutatkar, R.K., 1973. Education in Tribal culture: A Case Study, The Eastern Anthropologist, Vol. 21, No. 1, January pp.57-67.
4. Sachichidananda, 1966. 'Socio-Economic Aspects of Tribal Education', The Tribe, Vol.2, No.1-2. pp.17-22.
5. Sharma, V.D., 1966. 'Tribal Education in Rajasthan', Jr. of Tribal research Institute and training centre, Udaipur, vol.2, No. 1-2, pp. 1-4.
6. Vasnav, T.K.,2008. 'Chhattisgarh ki Aadim Janjaati', Raipur, Chattisgarh Anushandhan Kendra.
7. Yadav, M.S., 1994. 'Aadivaasi samuday me Sawasthy ke kuch paksh,' Jaipur, Rawat Publications.
8. World Health Organization, 2014. 'Tribal Health Bulletin', Jabalpur, Regional Medical Research Centre for Tribal"s ICMR, January Vol.20 special issue.

◆◆◆

प्रकाशन शोध प्रक्रिया का अंतिम और अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरण होता है। शोध समाज की मूल्यवान उपलब्धि है। इसे समाज के बीच आना ही चाहिए जिससे समस्त मानवता लाभ उठा सके। प्रकाशन के सीमित अवसर शोध को संकुचित करते हैं।